भारतीय कक्षाओं में व्यापक साक्षरता निर्देश का नमूना

Early Literacy Initiative

Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad

Practitioner Brief (12)

2019

Supported by

TATA TRUSTS

This Practitioner Brief is part of a series brought out by the Early Literacy Initiative anchored by the Azim Premji School of Education at the Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad.

मेरे पास एक बहुत ही स्मार्ट, बुद्धिमान, ख़ुशमिज़ाज, कुछ शरारती, कुछ बहुत ही शांत और शर्मीले बच्चों का समूह है, जिसमें सभी लगभग 7 साल के हैं। उन्हें जानते हुए अभी मुझे एक महीने से थोड़ा ही ज़्यादा हुआ है। मैं बेंगलुरु के एक सरकारी स्कूल में पढ़ा रही हूँ। मैं उन्हें कन्नड़ और अंग्रेज़ी पढ़ाती हूं। माध्यम कन्नड़ है, लेकिन चूँकि अंग्रेज़ी माँग में है, इसलिए स्कूल अंग्रेज़ी भी सिखाना चाहते हैं। इस समूह में मेरे पास 18 बच्चे हैं, जिनमें से अधिकांश कन्नड़ बोलते हैं, कुछ तेलुगु और कुछ हिंदी भाषी बच्चे हैं। पिछले महीने मुझे अपने बच्चों के बारे में थोड़ा जानने और समझने का समय मिला है, जैसे - वे किस भाषा में सबसे अधिक सहज हैं, वे किस तरह के परिवारों से आते हैं, उन्हें किस तरह का भोजन पसंद है, वे किस खेल का आनंद लेते हैं, आदि। मुझे इस बात की समझ है कि इनमें से कौन कमोबेश बातूनी है। राजू, मल्लम्मा, अनीता, हुसैन, कृष्णा, दुर्गा, श्रीनिवास, चैत्र, बाबू, रंगप्पा, रूबिया, लक्ष्मी, और राजप्पा सभी कन्नड़ भाषी हैं। हुसैन, रूबिया और मल्लम्मा को थोड़ी बहुत हिंदी भी आती है। नरगराजू, वेंकटेश और सीता तेलुगु भाषी बच्चे हैं जो अभी शहर में आए हैं और कन्नड़ उनके लिए बहुत नई भाषा है। कृष्णा और अनीता भी थोड़ा तेलुगु बोल सकते हैं। सूरज और बिंदिया हिंदी बोलने वाले बच्चे हैं जो शहर में दो साल से थोड़ा ज़्यादा समय से हैं, लेकिन बहुत कम कन्नड़ समझ सकते हैं। मैं कन्नड़ में जो कुछ भी बोलती हूं, उनमें से ज़्यादातर बातें वे समझ नहीं पाते हैं । इसके अलावा वे बेहद शर्मीले हैं और अपनी कक्षा के अन्य बच्चों से भी बात नहीं करते हैं। लेकिन कुल मिलाकर, अधिकांश बच्चे घर में कन्नड़ बोलते हैं और यहाँ बच्चों का सिर्फ़ एक छोटा समूह है जिन्हें कन्नड़ सीखने के लिए थोड़ा संघर्ष करना पड़ता है।

इस जानकारी के साथ मैं अपने बच्चों को आनेवाले महीनों में कन्नड़ पढ़ना और लिखना सीखने के महत्वपूर्ण पहलुओं को पढ़ाना शुरू कर रही हूँ। मुझे लगता है कि मुझे पता है कि प्रत्येक बच्चा क्या करने में सक्षम है और किस बात के लिए तैयार है। हालाँकि, मुझे अभी भी प्रत्येक बच्चे की अलग-अलग आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपने पाठों की योजना बनाना बहुत चुनौतीपूर्ण लगता है। वर्णमाला के प्रत्येक बच्चे के ज्ञान के बारे में मेरा आकलन भी मुझे चिंतित कर रहा है। मैं उन सभी को उनके पढ़ने में एक निश्चित समान स्तर पर कैसे लाऊं? कुछ बच्चे तो वर्णमाला के 5 - 6 अक्षर भी नहीं पहचान सकते। कन्नड़ के साथ सहज बच्चों में से केवल कृष्ण, दुर्गा और मल्लम्मा कन्नड़ में कुछ सरल शब्दों को पढ़ सकते हैं। बाक़ी ज़्यादातर संघर्षशील पाठक हैं, और मुझे ताज्जुब होता है कि कुछ बच्चों के घर की भाषा और कन्नड़ के बीच की खाई को मैं कैसे पाट पाऊंगी!

हालाँकि मेरे पास कक्षा में पाठ्य पुस्तकें और अन्य पठन सामग्रियां हैं, फिर भी मैं दो प्रश्नों से जूझती हूँ। एक, मैं अपने बच्चों को पढ़ना कैसे सिखाऊँ, और दूसरा, पढ़ाने की सबसे अच्छी विधि क्या है? जब अंग्रेज़ी की बात आती है तो यह सब और कठिन हो जाता है। इन बच्चों को अंग्रेज़ी बिल्कुल नहीं आती। मैं क्या करूं? मैं अपने पाठों की योजना कैसे बनाऊं? मैं उन्हें पहले क्या सिखाऊँ - अक्षर, वर्णमाला या शब्द का अर्थ। मै कहाँ से शुरू करूँ? काश, कोई मुझे बताए कि कैसे इन सभी बच्चों को मैं एक साथ सिखा सकती हूँ !

यहाँ प्रस्तुत शब्द-चित्र (आलेख) एक शिक्षक की डायरी का एक अंश है। वसन्ती एक उत्सुक, सजग शिक्षिका हैं जो अपनी कक्षा में हर एक बच्चे की शिक्षा में गहराई से निवेश करती है। उसने अपने छात्रों को जानने में कई सप्ताह बिताए हैं - उनकी ज़रूरतें, पसंद और नापसंद, आदि। वह सोच रही है कि वह कैसे उनके और बच्चों के सीखने और सीखने के इस रिश्ते को उनके लिए सार्थक बना सकती है। वसन्ती अकेली नहीं है। उनकी स्थिति कई भारतीय कक्षाओं में शिक्षकों के दिन-प्रतिदिन के संघर्षों में परिलक्षित होती है। हालांकि उनके 18 छात्रों की कक्षा, विशिष्ट भारतीय कक्षाओं की तुलना में एक सुखद अपवाद है, वरना हमारी अधिकतर भारतीय कक्षा में बच्चों की संख्या बहुत अधिक होती है। इस प्रकार, ये प्रश्न बड़ी कक्षाओं के संदर्भ में और भी कठिन हो जाते हैं, जहाँ छात्रों की ज़रूरतें और क्षमताएं अधिक विविध होती हैं।

हमें वसन्ती द्वारा उठाए गए सवालों पर वापस लौटना चाहिए - मुझे क्या सिखाना चाहिए और मुझे इसे कैसे सिखाना चाहिए? इस सारपत्र में, हम आपको कॉम्प्रिहेंसिव (या बैलेंस्ड) लिटरेसी फ्रेमवर्क (फिज़राल्ड़, 1999) से परिचित कराएंकराएंगे। हमें उम्मीद है कि यह आपको इन सवालों से निपटने के तरीक़े दिखाएगा। यह ढांचा क्या करता है? सीधे शब्दों में कहें तो यह ढांचा शिक्षकों के प्रश्नों के कुछ उत्तर प्रदान करता है:

- **हमे क्या पढ़ाना चाहिए ?**
- **कैसे पढ़ाना चाहिए ?**
- **किन चीज़ों से पढ़ाना चाहिए?**

किसी भी अन्य रूपरेखा की ही तरह, व्यापक साक्षरता फ्रेमवर्क भी दोषरहित (परफेक्ट) नहीं है; लेकिन यह विचारों को एक उपयोगी दिशा प्रदान करता है जहाँ से हम शुरू कर सकते हैं।

इस सारपत्र में, शिक्षक निम्नलिखित चीजो को जानने की उम्मीद कर सकते हैं:

- पद्धति का एक संक्षिप्त विवरण
- यहाँ वर्णित विशेष विचारों या तकनीकों की अधिक गहराई से व्याख्या के लिए प्रारंभिक साक्षरता पहल (Early Literacy Initiative) द्वारा निर्मित अन्य संसाधनों और सारपत्रों का संदर्भ ।

हालाँकि, यह प्रारंभिक भाषा और साक्षरता शिक्षण के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका नहीं है । भाषा विशेष की शिक्षण पद्धति पर चर्चा करना इस सारपत्र के दायरे से परे है (उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी बनाम भारतीय भाषाओं को कैसे पढ़ाया जाए)। न ही यह लेख शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में अलग-अलग प्रकार के शिक्षार्थियों के लिए अलग-अलग शिक्षण निर्देश तय करने में मदद करने में सक्षम होगा।

व्यापक (Comprehensive) या संतुलित (Balanced) साक्षरता फ्रेमवर्क

प्रारंभिक भाषा और साक्षरता का शिक्षण शिक्षा जगत में गंभीर बहस का विषय रहा है। छोटे बच्चे पढ़ना और लिखना कैसे सीखते हैं? क्या हमें पहले अक्षरों या वर्णों को सिखाने से शुरुआत करनी चाहिए, फिर अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना, शब्दों को जोड़कर वाक्य, वाक्यों को जोड़कर पैराग्राफ़ बनाना सिखाना चाहिए? या क्या कुछ अन्य दृष्टिकोण है जो बेहतर है? पहला दृष्टिकोण, जिससे हममें से कई ने पढ़ना और लिखना सीखा है, उसे "नीचे से ऊपर (bottom-up)" या "ध्वनि-विज्ञान" दृष्टिकोण कहा जाता है। यहाँ सही वर्तनी और उच्चारण पर ज़ोर देने के साथ शिक्षण और ध्वनियों पर स्पष्ट और व्यवस्थित ध्यान दिया जाता है। धारणा यह है कि जब बच्चे लिपि को धाराप्रवाह पढ़ने में सक्षम होते हैं तो वे स्वतः ही वही समझेंगे जो लिखा गया है।
इसके विपरीत एक और तरह का दृष्टिकोण है- "टॉप-डाउन", या "संपूर्ण भाषा" दृष्टिकोण। संपूर्ण भाषा सिद्धांतविद "ध्वनि-विज्ञान" आधारित दृष्टिकोण के साथ जुड़े ड्रिल और कौशल निर्देश की अर्थहीन प्रकृति का विरोध करते हैं । उनका तर्क है "नीचे से ऊपर (bottom-up)" या "ध्वनि-विज्ञान" के निम्न स्तरीय कौशल (Lower order skills) अर्जित करने में बहुत ज़्यादा ध्यान केंद्रित करने से उच्च-स्तरीय क्षमताएं (Higher order skills)अक्सर बाद के ग्रेड तक स्थगित हो जाती हैं। "संपूर्ण भाषा" (Whole Language) आधारित शिक्षा का समर्थन करने वाले विद्वानों का सुझाव है कि बच्चे पढ़ना और लिखना भी वैसे ही सीख जाते हैं जैसे वे बात करना सीख जाते हैं (गुडमैन, 1967)। इसलिए, शिक्षकों को चाहिए कि वे छात्रों को अत्यधिक प्रिंट-समृद्ध व साक्षर वातावरण से सराबोर कर दें और उन्हें पढ़ने- लिखने के ढेर सारे अवसर दें। इन अवसरों की निरंतर उपलब्धता के साथ, शिक्षकों को यह दिखाना चाहिए कि वे स्वयं कैसे पढ़ते- लिखते हैं। इस दृष्टिकोण में, पहले अक्षर के साथ शुरू करना महत्वपूर्ण नहीं है। बेशक, अक्षरों को पढ़ाया जाएगा, लेकिन किसी विशेष क्रम में नहीं। बच्चों को ड्राइंग, स्क्रिबलिंग और स्वनिर्मित वर्तनी का प्रयोग करके अपनी सोच को व्यक्त करने की कोशिश करने की अनुमति होगी। सभी निर्देश बच्चों के लिए सार्थक होंगे।

संपूर्ण भाषा (Whole Language) सिद्धांतकारों द्वारा व्यक्त किए गए कुछ विचारों के साथ किन्हें असहमति हो सकती है! हम सभी चाहते हैं कि बच्चों को जो भी पढ़ाया जाता है वह सार्थक लगे, और उन्हें पढ़ने- लिखने के भरपूर अवसर मिलें। हम उनके लिए अच्छे अभ्यासों का मॉडल (उदाहरण) भी बनना चाहते हैं और चाहते हैं कि वे अपने स्वयं के पढ़ने- लिखने के साथ प्रयोग करके देखें। संपूर्ण भाषा पद्धति का उपयोग 1980 और 1990 के दशक के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) में कई कक्षाओं में प्राथमिक दर्शन के रूप में किया गया था जो शिक्षण निर्देशों को दिशा-निर्देश देता है। इस दृष्टिकोण को 20 वर्ष तक आज़माने के के बाद इसका अध्ययन करने वाले कई विद्वान एक जैसे निष्कर्ष पर पहुंचे (देखें: राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद, 1998): संपूर्ण भाषा सिद्धांतकारों की वकालत करने वाली कई कार्य प्रणाली से अधिकांश बच्चे लाभांवित होते हैं, लेकिन उन्हें भी अक्षर-ध्वनि संबंधों को सीखने के लिए स्पष्ट और व्यवस्थित रूप से मदद की आवश्यकता होती है।

ऐसा प्रतीत होता है कि "नीचे से ऊपर" (Bottom-up) या "टॉप-डाउन"/"संपूर्ण भाषा" दोनों दृष्टिकोणों के कुछ फ़ायदे और कुछ सीमाएं हैं; और दोनों दृष्टिकोणों में कोई भी अकेले अपने आप में पूर्ण नहीं है। यह समझ, अब हमें एक "संतुलित" या एक व्यापक प्रारंभिक भाषा और साक्षरता दृष्टिकोण पर विचार करने के लिए विवश करता है।

इससे पहले कि हम शब्द "संतुलन" की जाँच-पड़ताल करें, थोड़ा रुककर ख़ुद से पूछते हैं : शुरुआती साक्षरता और भाषा कक्षा के कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्य क्या हैं? वासंती जैसे शिक्षक जिनकी डायरी आप पहले पढ़ चुके हैं, इस प्रश्न का उत्तर कैसे दे सकते हैं? हमारी राय में, प्रारंभिक भाषा और साक्षरता कक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य व्यस्त और कुशल, उत्साही, जीवन भर निरंतर पढ़ने -लिखनेवाले पाठक के रूप में विकसित करने में मदद करना है। हम चाहते हैं कि बच्चे स्वचालित रूप से और धाराप्रवाह ढंग से एक पाठ को डिकोड कर सकें जिससे कि वे यह समझ सकें कि इसका क्या मतलब है। हम चाहते हैं कि वे जो कुछ भी पढ़ रहे हैं उसे समझें। हम चाहते हैं कि वे अपने जीवन में विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की पुस्तकों और अन्य पठन और लेखन सामग्रियों का चयन और फिर उन्हें उपयोग करने में सक्षम हों। इसमें विषय सीखना भी शामिल है। उन्हें आलोचनात्मक सोच और जागरूकता के साथ पाठ पढ़ने में सक्षम होना चाहिए, सवाल पूछना चाहिए, जवाब ढूँढना चाहिए और उन पाठों के बारे में सोचना ज़ारी रखना चाहिए जो उन्होंने पढ़े हैं। हम चाहते हैं कि वे उन किताबों को सौंदर्यपरकता के साथ और भावनात्मक रूप से जवाब देने में सक्षम हों जो उन्होंने पढ़ी हैं - उन्हें कौन-से हिस्से पसंद आए और क्यों, कौन-से हिस्से उन्हें पसंद नहीं आए और क्यों? हम चाहते हैं कि वे विभिन्न प्रकार के पाठकों और उद्देश्यों के लिए आसानी से लिख सकें। और हम उन्हें स्कूली शिक्षा के शुरुआती वर्षों के दौरान इन लक्ष्यों में से कई के लिए एक अच्छी नींव देना चाहते हैं। तीसरी कक्षा के अंत तक, वे अपने पढ़ने-लिखने की कोशिश के रास्ते में सहज होने चाहिए!

युवा पाठकों और लेखकों के लिए इतने बड़े और महत्वाकांक्षी लक्ष्य ! एक बच्चे की स्कूली शिक्षा के पहले कुछ वर्षों के भीतर वसन्ती जैसी शिक्षिका भी यह सब करने का सोच भी कैसे सकती है? क्या यह संभव भी है? या फिर हमें अपनी सुरक्षित और जानी हुई पद्धति के साथ आगे बढ़ना चाहिए जिसमें पहले अक्षर, शब्द, वाक्य और पैराग्राफ़ सिखाते हैं ? क्या हमें वर्तनी सही करने के लिए लगातार श्रुतलेख कराते रहना चाहिए और बच्चों के लेखन को साफ़-सुथरा बनाने के लिए लिखावट का अभ्यास कराना चाहिए? यही वह जगह है जहां "संतुलित" या व्यापक साक्षरता निर्देश का विचार आता है - सीमित समय में बहुत कुछ करने के लिए।

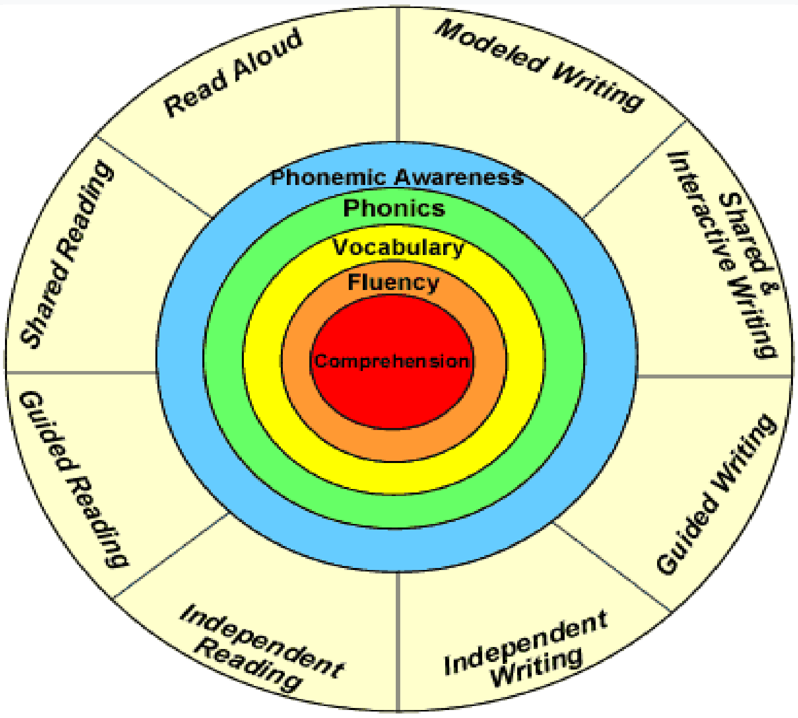


Figure 1. Figure showing the key elements of a Comprehensive Literacy Framework

चित्र 1, व्यापक साक्षरता ढांचे (Comprehensive Literacy Framework) का संक्षिप्त विवरण देता है जैसा कि आमतौर पर यह कई पाश्चात्य संदर्भों में वर्णित है। आंतरिक संकेंद्रित वृत्त प्रश्न का उत्तर देते हैं, "हमें क्या सिखाना चाहिए?"। ये मंडल पांच घटकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में काम करने वाले शोधकर्ताओं ने पढ़ने और लिखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटकों के रूप में पहचाना है: फ़ोनेमिक अवेयरनेस (ध्वनि जागरूकता), फ़ोनिक्स (वर्ण ज्ञान), धारा-प्रवाह, शब्द-भंडार और समझ। बाहरी वृत्त प्रश्न "हम कैसे सिखाएं ?" को संबोधित करता है । यह विभिन्न दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करता है जिनका शिक्षक पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए उपयोग कर सकते हैं, जैसे, रीड अलाउड (मुखर वाचन), साझा पठन, साझा लेखन,

निर्देशित पठन, निर्देशित लेखन, आदर्श लेखन, स्वतंत्र पठन और स्वतंत्र लेखन। हम इन वृत्त के हर घटक की व्याख्या इन प्रश्नों के माध्यम से करेंगे (क) क्या पढ़ाया जाए? और (ख) कैसे पढ़ाया जाए? इसके अलावा, हम एक तीसरे प्रश्न को भी संबोधित करेंगे, (ग) किन चीज़ों के साथ पढ़ाया जाना चाहिए?

(क) क्या पढ़ाया जाए?

प्रारंभिक भाषा और साक्षरता शिक्षण में हमें क्या सिखाना चाहिए? चित्र 1 हमें पाँच महत्वपूर्ण पहलुओं की ओर इशारा करता है जिन्हें हमें ध्यान से देखना चाहिए। इनमें से प्रत्येक का संक्षेप में यहाँ वर्णन किया गया है।

1. समझ- समझ, या अर्थ-निर्माण व्यापक साक्षरता मॉडल (Comprehensive Literacy Model) की जान है। जब कोई बच्चा समझ पाता है या उसका अर्थ-निर्माण कर लेता है तो वह , तर्क कर सकता है, भेद कर सकता है, समझा सकता है, विस्तार कर सकता है, सामान्यीकरण कर सकता है, उदाहरण दे सकता है, तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष पर पहुँच सकता है,अनुमान लगा सकता है, फिर से लिख सकता है और उसने जो पढ़ा है उसे संक्षेप में बता सकता है। शिक्षकों को बच्चों को यह सिखाने की ज़रूरत है कि जो उन्होंने पढ़ा या लिखा है उसका अर्थ कैसे बनाया जाए - यह एक मुख्य पहलू है जिसपर ध्यान देने की आवश्यकता है।

2. शब्द-भंडार - समझ के साथ पढ़ने, लिखने और बोलने के लिए, बच्चों को शब्दों की एक विस्तृत श्रृंखला की आवश्यकता होती है। यह केवल शब्द के अर्थ को रटने के बारे में नहीं है । यदि शब्द ज्ञान ठीक से सिखाई जाती है तो बच्चे अपने बोलने और लेखन में नए शब्दों का उपयोग करने में सक्षम हो पाते हैं।

3. धारा-प्रवाह- प्रवाह गति, सटीकता और हाव-भाव के साथ मौखिक रूप से पढ़ने की क्षमता है। हमारी कक्षाओं के कई बच्चे अक्षर को पहचानने में सक्षम हैं, लेकिन उन्हें परिश्रम के साथ एक-एक करके पढ़ते हैं। इतना धीरे-धीरे पढ़ने से बच्चों के लिए यह समझना मुश्किल हो जाता है कि क्या पढ़ा गया है। आसानी से पढ़ने या वर्तनी में सक्षम होने से उन्हें समझने में मदद मिलती है कि क्या पढ़ा या लिखा जा रहा है। प्रारंभिक कक्षाओं में धाराप्रवाह पठन को विकसित करने में मदद करना एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

4. वर्ण ज्ञान- इसका अर्थ वर्ण / अक्षर और ध्वनियों के बीच संबंधों को पहचानने की क्षमता है। जैसा कि पहले खंड में बताया गया है, बच्चों को व्यवस्थित और स्पष्ट रूप से वर्ण ज्ञान सिखाए जाने की ज़रुरत होती है। पढ़ना और लिखना, बोलना सीखने की तरह स्वाभाविक नहीं है । हमे बच्चों] को वर्ण और ध्वनि के संबंध को व्यवस्थित एवं स्पष्ट तरीक़े से सिखाने की ज़रूरत है. मेनन एवं अन्य सहयोगी (2017) ने बताया कि भारतीय लिपियों में प्रयुक्त सभी अक्षरों को सीखने में बच्चों को कई साल लग सकते हैं। इसी तरह, अंग्रेज़ी भाषा में बच्चों को सभी वर्तनी पैटर्न से परिचित होने में कई साल लगते हैं।

5. ध्वनि जागरूकता[1]- ध्वनि जागरूकता, बोली जानेवाली भाषा में ध्वनियों पर ध्यान देने , सोचने और उन ध्वनियों के साथ काम करने की क्षमता है। इसमें तुकबंदी को सुनने , वाक्यों में शब्दों को अलग कर पाने, शब्दों में सिलेबल (शब्दांश) को पहचानने और ऐसी ही अन्य क्षमताएं शामिल हैं बच्चों को आवाज़ सुनने में सक्षम होना क्यों महत्वपूर्ण है? क्योंकि हम जो पाठ पढ़ते हैं और लिखते हैं वह ध्वनियों से बनता है! ध्वनि जागरूकता एक छोटे बच्चे को यह सीखने में मदद करता है कि "बाल" और "बकरी" दोनों शुरू “ब” ध्वनि से शुरू होते है; या "नल" और "फल" दोनों तुकांत ध्वनियां हैं ? ध्वनि को एक साथ रखना

[1] ध्वनि जागरूकता एवं संबंधित अन्य महत्वपूर्ण पहलू सिखाने में समझ बढ़ाने के लिए ELI सारपत्र 5 “पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक कक्षाओं में ध्वनि जागरूकता को सहारा देना” देखें ।

(जोड़ना) या उन्हें अलग -अलग करना (ध्वनियों को तोड़ना) – ये सभी अभ्यास, बच्चों को पढ़ने, बोलने और लिखने में बेहतर बनने में मदद करते हैं।

क्या केवल यही वे पाँच घटक हैं जिन्हें बच्चों को पढ़ने और लिखने के बारे में जानने की आवश्यकता है? बिल्कुल नहीं! हम अनुशंसा करते हैं कि यहाँ वर्णित पाँच घटकों के अलावा, हमें बच्चों को निम्नलिखित बातें सीखने में मदद करनी चाहिए:

6. मौखिक भाषा का विकास- बच्चे अपने घरों की मौखिक भाषा के समृद्ध संपदा के साथ स्कूल आते हैं। हालाँकि, कुछ बच्चों के घर और स्कूल की भाषाएं काफी अलग होती हैं और उन्हें स्कूल में एक नई भाषा सीखने की आवश्यकता होती है! यहां तक कि जो बच्चे घर और स्कूल में एक ही भाषा बोलते हैं, उन्हें अपनी मातृभाषा में अपनी समझ और उपयोग में वृद्धि ज़ारी रखने की आवश्यकता होती है। इसलिए, प्रारंभिक स्कूल के वर्षों के दौरान ध्यान केंद्रित करने के लिए मौखिक भाषा का विकास एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

7. साहित्यिक ज्ञान- बच्चों को अच्छे साहित्य की सराहना करने एवं उपलब्ध ज्ञान के आधार पर अपनी प्रतिक्रिया देने में सक्षम होना चाहिए। यहां तक कि बहुत छोटे बच्चे अच्छी कहानियों और अन्य पाठों की सराहना, समझ और प्रतिक्रिया करना सीख सकते हैं जो उन्हें रीड अलाउड के माध्यम से पढ़ाए जाते हैं।

8. तार्किक पठन (Critical Reading)- बच्चे जो पढ़ते हैं उन्हें केवल "समझना" ही पर्याप्त नहीं है। जो वे पढ़ते हैं उनकी समीक्षा, आलोचना और प्रतिक्रिया करने में भी उन्हें सक्षम होना चाहिए। हालांकि इस तरह के कौशलों को विकसित करने में कई साल लगते हैं, पर शुरुआती वर्षों के दौरान इनकी नींव रखी जा सकती है और ऐसा करना बहुत आवश्यक भी है ।

9. उनके जीवन में पढ़ने और लिखने का उपयोग करना- बच्चों को सिखाया जाना चाहिए कि वे अपने दैनिक जीवन में पढ़ने और लिखने का उपयोग कैसे करें। उदाहरण के लिए, वे सूची बनाना सीख सकते हैं, पत्र लिख

सकते हैं, किसी चीज़ को कैसे करना है इसे लेखन के माध्यम से समझा सकते हैं, साथ ही साथ पढ़ने और लिखने के माध्यम से अपने जीवन की घटनाओं पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

यह सूची पूर्ण नहीं है। हमें यक़ीन है कि आप " पढ़ाने के लिए अवश्यक " अन्य तत्वों के बारे में सोच सकते हैं। कृपया इस सूची में स्वयं की "चीज़ें/ तत्त्व" जोड़ने के लिए स्वतंत्र महसूस करें। इस लेख की मंशा **प्रारंभिक भाषा और साक्षरता कक्षाओं में पढ़ाने के लिए क्या महत्वपूर्ण है, इस बारे में सोचने के लिए** प्रेरित करना है।

कैसे पढ़ाना चाहिए ?

चित्र 1 का बाहरी घेरा, कई तरीक़ों के बारे में स्पष्ट विवरण देता है जिनके द्वारा शिक्षक, बाल शिक्षार्थियों को पढ़ना और लिखना सिखा सकते हैं। आइए हम संक्षेप में प्रत्येक को समझने का प्रयास करें।

रीड अलाउड (मुखर वाचन) [2]**-** आमतौर पर, भारतीय कक्षाओं में शिक्षक पाठ्यपुस्तक से छात्रों के समक्ष पढ़ते हैं। शिक्षक के पीछे छात्र पाठ को वाक्य-दर-वाक्य दोहराते हैं। यहां, हम आपके छात्रों के समक्ष पढ़ने के लिए एक अलग तरीक़ा पेश कर रहे हैं – **मुखर वाचन** का तरीक़ा। एक व्यापक साक्षरता ढांचे (Comprehensive Literacy Framework)में, मुखर वाचन का उद्देश्य बच्चों को अक्षर और शब्दों को पढ़ना सिखाना नहीं है , बल्कि यह उन्हें अच्छे साहित्य से परिचित कराने ,उनके शब्द -भंडार को विकसित करने , भाषा का उपयोग करने और अर्थ- निर्माण करने का समय है। मुखर वाचन, कक्षा में समुदाय की भावना का निर्माण करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, वासंती अपनी कक्षा में समुदाय और अपनेपन की भावना को सुनिश्चित करने के लिए **मुखर वाचन** के लिए विभिन्न भाषाओं की पुस्तक ला सकती हैं[3]। वह अपनी कक्षा में भाषा के लिए सूरज और बिंदिया जैसे बच्चों को परिचित कराने के लिए सरल कन्नड़ कहानी की पुस्तकों का भी उपयोग कर सकती थी।

अपनी कक्षा में इसे आज़माने से पहले, निम्नलिखित बातों को पढ़ें और ध्यान में रखें :

1. अपने छात्रों के साथ मुखर वाचन शुरू करने के लिए एक "अच्छी" पुस्तक चुनें। पाठ्य पुस्तकों से बचें। स्कूल या कक्षा पुस्तकालय से चुने गए बच्चों की किताबें या साहित्य देखें। जहाँ तक संभव हो सके, उच्च गुणवत्ता

[2] मुखर वाचन की विस्तृत जानकारी के लिए पढ़े ELI सारपत्र 9

[3] भारतीय प्रकाशकों की कहानी के किताबों की विस्तृत समीक्षा पढ़ने के लिए एवं निःशुल्क ऑनलाइन कहानी किताबें प्राप्त करने के लिए, जिन्हें आप अपने समूह में मुखर वाचन के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं, कुछ महत्वपूर्ण लिंक हैं- www.goodbooks.in और www.storyweaver.org.in

की पुस्तकों का चयन करें ।[4] कई भारतीय प्रकाशक युवा भारतीय बाल पाठकों के लिए अच्छा साहित्य ला रहे हैं। सभी प्रकार के पाठ, जैसे, कथा, कविता, तथ्य-परक, आदि , मुखर वाचन के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

[4] अच्छी किताब का चयन कैसे करें-इसके लिए NCCL Guide to Good Books, बाल साहित्य राष्ट्रीय केंद्र (NCCL) 2012 देखें।





चित्र ***2 & 3***. मुखर वाचन कक्षा के अंदर एवं बाहर भी संचालित की जा सकती है. हम बड़ी किताब भी इस्तेमाल कर सकते हैं. चित्र पूर्णिमा अधिगम केंद्र, बैंगलोर एवं बुकवर्म, गोवा के सौजन्य से

2. पाठ्य-सामग्री का चयन करते समय, बच्चों की पृष्ठभूमि और पूर्व ज्ञान के आधार पर नए ज्ञान -निर्माण की आवश्यकता को ध्यान में रखें, और साथ-साथ उनकी सोच को चुनौती देने के लिए पर्याप्त तत्व प्रदान करने का भी प्रयास करें।

3. इस पद्धति में याद रखने का अगला बिंदु यह है कि इसमें शिक्षक को, बच्चों के लिए पाठ पढ़ना है. बच्चों को आपके साथ पाठ को दोहराने की उम्मीद नहीं करनी है और न ही बच्चो को दोहराने के निर्देश देने है।

4. हर दिन अपने बच्चों के सामने **मुखर वाचन** करने की कोशिश करें। **मुखर वाचन** से पहले उनके साथ पुस्तक पर चर्चा करें। उदाहरण के लिए, कहानी को पढ़ने से थोड़ा पहले उसपर चर्चा करें, बच्चों को पाठ से कुछ चित्र दिखाएं, उनके आस-पास के प्रश्न पूछें, कठिन शब्दों को समझाएं, इत्यादि। कहानी को पढ़ना शुरू करने से पहले ऐसा करने से विभिन्न भाषा पृष्ठभूमि से आनेवाले बच्चे भी कहानी को समझ सकते हैं । पाठ को पढ़ते समय, कुछ समय रुकें, और आनेवाली दिलचस्प घटना पर चर्चा करें। इन चर्चाओं को संक्षिप्त रखा जाना चाहिए ताकि कहानी का प्रवाह बाधित न हो। कठिन शब्द तथा भ्रामक अवधारणा समझाने के लिए और ऐसे प्रश्न पूछने के लिए रुकना , जो छात्रों को सोचने के लिए विवश करें या किसी चित्र पर चर्चा करने लिए रुकना - पाठ के पढ़ने के दौरान रुकने और बात करने के लिए सभी उत्कृष्ट कारण हैं। लेकिन याद रखें, शिक्षिका को पढ़ने से पहले ही तय कर लेना चाहिए कि वह कहाँ और क्यों रुकना चाहती है।

5. पढ़ने के बाद छात्रों के साथ उसपर चर्चा करना महत्वपूर्ण है। उनसे पूछें कि क्या उन्हें यह पसंद आया, आया तो क्यों? उन्हें कहानी के उन हिस्सों को दिखाने के लिए कहें जो उन्हें पसंद है। उनसे पूछें कि वे कहानी की किन बातों से सहमत / असहमत हुए? उन्हें पाठ में आए महत्वपूर्ण विचारों के बारे में सोचने में मदद करें । उन्हें इस पुस्तक के विचारों को उनके लेखन में, या अन्य विषयों के सीखने से जोड़ने में मदद करें। यदि समय समाप्त हो जाता है तो ये चर्चाएं अगले दिन भी ज़ारी रह सकती हैं। याद रखें, सावधानीपूर्वक चर्चा के बिना **मुखर वाचन** उतना प्रभावी नहीं रह जाताहै ।

मॉडल (आदर्श) लेखन- इस तरीक़े के दौरान शिक्षक, 'अच्छा लेखन क्या होता है' इसका प्रदर्शन करके छात्रों को दिखाते हैं । ऐसा करने का एक आसान तरीक़ा यह है कि आप अपने स्वयं के लेखन को छात्रों के साथ साझा करें। आप अपने लेखन को पढ़कर सुना सकते हैं और उनके साथ अपनी लेखन प्रक्रिया पर चर्चा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, आपको इस रचना के लिए विचार कैसे मिला, आपने इसे लिखने के लिए किस प्रकार कोशिश की , इसे बेहतर करने के बारे में आपकी क्या सोच है ,आदि के बारे में अपने अनुभव साझा करें । बहुत

नन्हे लेखकों के साथ भी ऐसा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, नन्हे लेखकों को अक्सर **कहानी की घटनाओं को क्रमबद्ध करना मुश्किल** लगता है - पहले क्या हुआ, बाद में क्या हुआ, इत्यादि। अपने इन छात्रों को पहले आप ये बताएं कि कहानी की विभिन्न घटनाओं को आपने कैसे व्यवस्थित किया । इस तरह, बहुत नन्हें लेखक भी जान सकते हैं कि अधिक परिपक्व लेखक अपने लेखन में आनेवाली समस्याओं को कैसे हल करते हैं और इससे सीख भी सकते है।



Figure 4. Modelled Writing. QUEST, Maharashtra

शेयर्ड रीडिंग (साझा पठन) – मुखर वाचन में, केवल शिक्षक पढ़ते हैं, जबकि छात्र सुनते हैं। इसके विपरीत, साझा पठन में शिक्षक और छात्र दोनों एक साथ पाठ पढ़ते हैं। शिक्षकों और छात्रों को एक साथ क्यों पढ़ना चाहिए? जब बहुत नन्हें पाठक कक्षा में आते हैं तो वे शुरुआत में स्वतंत्र रूप से पढ़ने में सक्षम नहीं होते । भारतीय कक्षाओं में, हम अपने नन्हें छात्रों को केवल अक्षर या सरल शब्द और वाक्य पढ़ने के लिए कहते हैं। यह छोटे बच्चों के लिए उबाऊ हो सकता है। यह उन्हें शब्द ज्ञान, प्रवाह और तार्किक चिंतन कौशल विकसित करने में मदद नहीं करता है, या आनंद के लिए पढ़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता है। कहानियों के मुखर वाचन और साझा पठन में संलग्न होकर, बच्चे उस स्तर से आगे बढ़ सकते हैं जिस पर वे वर्तमान में पढ़ रहे हैं और अपनी पठन क्षमताओं को लेकर उनमें आत्मविश्वास आ जाता है।



चित्र 5. बड़ी किताब के साथ साझा पठन QUEST, महाराष्ट्र.

साझा पठन के लिए कुछ सुझाव:

• चुने गए पाठ में प्रिंट का आकार बड़ा होना चाहिए जिसे दूर से भी पढ़ा जा सके। आप "बिग बुक्स", और कविताएं, लघु-कथाएं या छात्रों द्वारा तैयार की गयी कहानी भी ले सकते हैं जिन्हें चार्ट-पेपर पर बड़े अक्षरों में लिखा गया हो, या स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया हो ताकि हर कोई एक साथ पढ़ सकें।

• साझा पठन का संचालन करते समय, पाठ के प्रत्येक शब्द को इंगित करें (जैसा कि चित्र 4 में दिखाया गया है)। इस तरह, छोटे बच्चे उस प्रिंट को पढ़ने की दिशा को सीखते हैं - और वे उन शब्दों पर भी ध्यान देते हैं जिन्हें शिक्षक इंगित करते हुए पढ़ रहे हैं।

• सरल, लयबद्ध पाठ चुनें जो याद करने योग्य और दोहराने में मज़ेदार हों। जब पाठ्य को बार-बार पढ़ा जाता है तो बच्चे पाठ के दोहराव वाले हिस्से का पूर्वानुमान लगा लेते हैं और "साथ पढ़ने" में सक्षम हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, नर्सरी की अंग्रेज़ी कविता, "ओल्ड मैकडोनाल्ड", को पढ़ने में सभी बच्चे शामिल हो सकते हैं, "ओल्ड मैकडोनाल्ड हैड अ फ़ार्म, ईई-य-ई-य-ओह!" [“Old MacDonald had a farm, Ee-ya-ee-ya-oh!”] वाक्यों के दोहराववाले फ्रेम, “एंड ऑन दैट फ़ार्म ही हैड अ -------” बच्चों को साथ "पढ़ने" का भी मौक़ा देता है, क्योंकि वे चित्र से जानवर के नाम का अनुमान लगा सकते हैं (यदि कोई चित्र है)। यहाँ, भले ही वे बड़े बच्चों की तरह (ध्वनियों को डिकोड करके) शब्दों को नहीं पढ़ रहे हों , पर पाठ के साझा पठन में नन्हें पाठक भाग लेने में सक्षम होते हैं।

• प्रत्येक पाठ को कई बार ज़ोर से पढ़ें - ताकि, बाद में बच्चे आपके साथ-साथ इसे पढ़ सकें ।

साझा लेखन - "आज, मैंने एक लाल गुब्बारा देखा"। कल्पना कीजिए अगर आपने ब्लैकबोर्ड पर यह वाक्य लिखा और बच्चों को उस दिन उन्होंने जो देखा है उस बारे में सोचकर बताने के लिए कहा है। कल्पना कीजिए कि ऋषि ने एक नवजात बछड़े को देखा। शरणी ने एक ट्रक को गेहूं ले जाते देखा। प्रवीण ने एक फुटबॉल मैच देखा। आप कई छात्रों को अपनी प्रतिक्रियाएँ देने के लिए कह सकते हैं और उन्हें बोर्ड पर लिखने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप लिख सकते हैं, "आज मैंने....... देखा"। ऋषि बछड़े के लिए "ब" लिखना जानते हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि आगे कैसे लिखना है। आप दोनों मिलकर शब्द को पूरा कर सकते हैं। दूसरे दिन, कक्षा चर्चा कर सकती है, "आज मैंने नाश्ते में .... खाया।" तीसरे दिन, शायद कक्षा एक साथ टहलने जाती है और अपने साझा अनुभवों पर चर्चा करना चाहती है। वे एक साथ मिलकर एक रचना लिख सकते हैं। इसे साझा-लेखन कहा जाता है।

इस तरह के लेखन का उद्देश्य बच्चों को लिखित शब्द के साथ जोड़ना और वर्तमान स्तर से आगे के लेखन में उन्हें सहारा देना है। साझा लेखन में, शिक्षक और बच्चे संदेशों और कहानियों की रचना के लिए एक साथ काम करते हैं। आप इसे एक अवसर के रूप में उपयोग कर सकते हैं।

यह दिखाने के लिए कि कौन-सी विचार प्रक्रियाएं लेखन में शामिल होती हैं, बच्चों को अपनी ख़ुद की सोच को मॉडल करके दिखाएं। उन्हें लेखन की कुछ परिपाटियों से परिचित भी कराएं। उदाहरण के लिए, पूछें, ", मेरी गेंद किसने ली।' यह एक सवाल है। शायद मुझे उस वाक्य के अंत में एक प्रश्न-चिह्न (?)जोड़ना चाहिए, वापस जाएं और प्रश्न-चिह्न जोड़ें। बच्चे उस निर्णय को देख पाएंगे और और अवलोकन कर पाएंगे कि आपने वह निर्णय कैसे लिया। छात्रों को लेखन पर विचारों का योगदान करने के लिए कहें। जब वे अपने विचारों को बोलकर लिखाते हैं तो आप उनके लिए 'लिखनेवाले' का काम करें। एक बार यह हो जाने के बाद साथ मिलकर लिखे गए लेख को फिर से कई बार पढ़ा जा सकता है। इसे बाद में साझा पठन गतिविधि के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। वासंती की कक्षा में, साझा लेखन पद्धति उनके विविध शिक्षार्थियों के समूह को जोड़ने का एक उपयोगी तरीक़ा हो सकता है - क्योंकि प्रत्येक बच्चा अपने स्वयं के स्तर और क्षमताओं के अनुसार योगदान कर सकता है।



Figure 6. साझा लेख . QUEST, महाराष्ट्र

निर्देशित पठन (गाइडेड रीडिंग) [5]- गाइडेड रीडिंग में, शिक्षक पढ़ने की "ज़िम्मेदारी बच्चों पर छोड़ता है "। साझा पठन जिसमें शिक्षक पढ़ते हैं और बच्चे अपना छिटपुट योगदान देते हैं , के विपरीत यहाँ, बच्चे पढ़ते हैं जबकि शिक्षक उनकी मदद करते हैं। इस पद्धति में उठाए जाने वाले कदम हैं:

1. अपने छात्रों को पढ़ने के स्तर के आधार पर समान क्षमतावाले छोटे समूहों में व्यवस्थित करें। अर्थात्, समान आवश्यकताओं और पठन -स्तर वाले बच्चों को एक साथ समूहबद्ध किया जाए।

[5] कृपया ELI का ब्लॉग देखें "From Theory to Practice: Guided Reading Strategies to Support Fluency and Comprehension", जो निर्देशित पठन पर संक्षिप्त विवरण देता है.

2. एक ऐसे पाठ का चयन करें जिसे बहुत कम सहयोग पाकर छात्रों द्वारा पढ़ा जा सकता है। इस प्रकार, मुखर वाचन और साझा पठन के विपरीत, निर्देशित पठन के लिए पाठ छात्रों के पठन स्तर का होना चाहिए। इसका उद्देश्य छात्रों की समझ, शब्दावली और शब्द-सुलझाने के कौशल के साथ-साथ पढ़ने में धाराप्रवाह बनाने में उन्हें मदद करना है।

3. एक ही समूह के सभी छात्र एक ही समय में एक ही पाठ पढ़ते हैं। समूह में प्रत्येक छात्र ख़ुद से पाठ पढ़ता है। आपकी भूमिका समूह में प्रत्येक बच्चे पर पूरा ध्यान देना और सहयोग प्रदान करना है और पाठकों के रूप में उनकी प्रगति में मदद करने के लिए रणनीति सुझाना है। प्रत्येक सत्र के शुरुआत और अंत में, आप छोटे समूहों को संबोधित कर सकते हैं ।

- शुरू में पाठ का परिचय कराएं और अंत में पाठ पर चर्चा करें।



Figure 7. Guided Reading. QUEST, Maharashtra

गाइडेड रीडिंग उन रणनीतियों और तकनीकों के सुदृढ़ीकरण और अभ्यास का मौक़ा देता है जिन्हें शिक्षक ने रीड अलाउड या साझा पठन के दौरान मॉडल किया हो (करके दिखाया हो) । पुनः, वासंती के लिए यह एक बहुत ही उपयोगी तकनीक होगी - क्योंकि वह शिक्षार्थियों के सीखने के स्तर एवं आवश्यकताओं के मुताबिक़ उनके विभिन्न समूहों तक पहुंच सकती है ।

निर्देशित लेखन-अधिकांश भारतीय कक्षाओं में, बच्चों को अभिव्यक्ति और संप्रेषण के लिए लिखना सिखाने में बहुत कम समय दिया जाता है। बड़ी कक्षाओं में, छात्रों को पत्र, निबंध और भी बहुत सारे मुद्दों पर लिखना सिखाया जाता है, लेकिन छोटे बच्चे को लिखना सिखाना ज़्यादातर सही वर्तनी और अच्छी लिखावट तक ही सीमित रह जाता है। लेकिन अच्छा लेखन सिखाने में और बहुत कुछ शामिल है! यहां तक कि बहुत नन्हें लेखक

भी यह सीख सकते हैं कि कैसे सार्थक तरीक़े से लिखना है।[6] छात्रों को "स्वतंत्र लेखन" के लिए समय देना, जहां उन्हें अपनी कल्पना के आधार पर "कुछ भी" लिखने के लिए कह दिया जाए, इसका हल नहीं है।

यह काम नहीं करेगा क्योंकि बिना किसी संरचना या शिक्षक के इनपुट के बिना अच्छा लिखनेवाले तो अच्छा लिखेंगे, पर औसत लिखनेवाले औसत ही रहेंगे और कमज़ोर लिखनेवाले को तो इस गतिविधि से विरक्ति हो सकती है। इसी कारण हम अनुशंसा करते हैं की शिक्षक "निर्देशित लेखन" प्रारूप में लिखना सिखाएं, जहाँ,

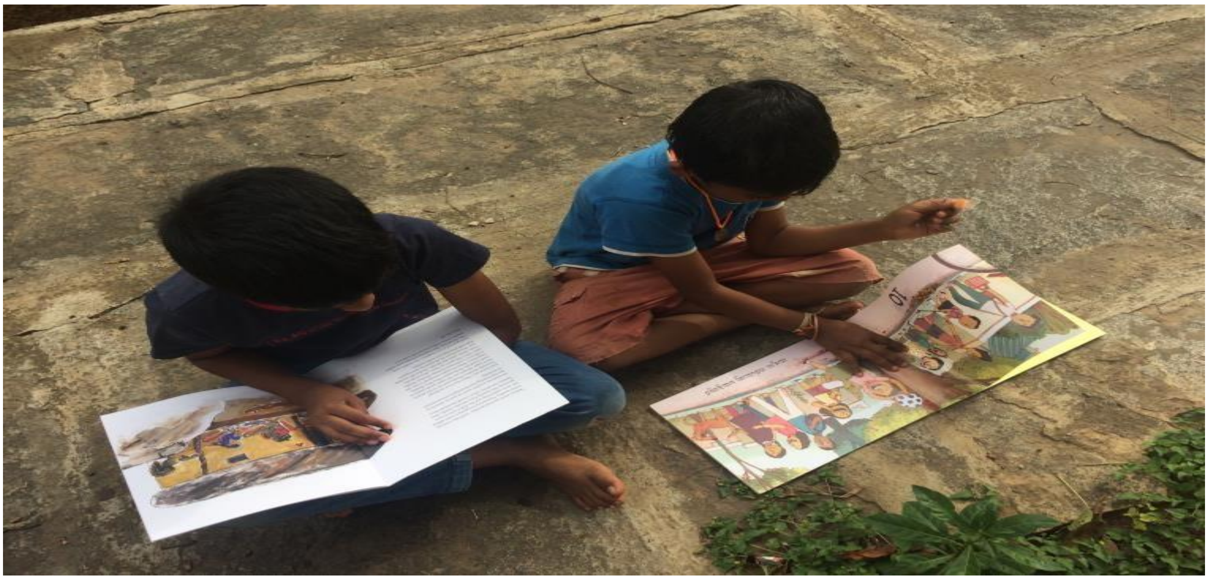
• छात्रों में विभिन्न प्रकार के लेखन की समझ बनाई जाती है - उदाहरण के लिए, स्वयं के जीवन पर आधारित कहानी लिखना (व्यक्तिगत कथा) बनाम एक काल्पनिक कहानी, या कविता या पत्र लिखना आदि।
• शिक्षक विभिन्न शैलियों (विधाओं)के बारे में और दिलचस्प तरीक़े से लिखने के बारे में छात्रों को मॉडल और मार्गदर्शन करते हैं। उदाहरण के लिए, संवादों को जोड़ना कहानी को दिलचस्प बना सकता है।
• एक-एक छात्र के लिए या छोटे समूह में वार्तालाप के दौरान सहयोग बढ़ाया जा सकता है।
• शिक्षक विभिन्न प्रकार के लेखन की रणनीतियों में छात्रों का मार्गदर्शन कर सकते हैं एवं उनका सहयोग कर सकते हैं।
• बच्चे एक-दूसरे को फीडबैक भी दे सकते हैं।
• बच्चे एक लेखन कार्य के एक से अधिक मसौदे (ड्राफ्ट) लिख सकते हैं। नियमित रूप से और केंद्रित मार्गदर्शन मिलने से उनका दूसरा ड्राफ्ट पहले वाले की तुलना में बेहतर हो जाता है।



Figure 8. Guided Writing. QUEST, Maharashtra

[6] कृपया *कक्षा के लिए पुस्तक निर्माण* संबंधित विचार के लिए ELI सारपत्र 7 और बच्चों के लेखन में निर्देश के लिए ELI 11 *प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों के लेखन को सहारा* देखें

स्वतंत्र पठन- बच्चों को स्वतंत्र रूप से या साथी के साथ पढ़ने के लिए समय चाहिए। जब बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के अवसर प्रदान किए जाते हैं तो इससे उन्हें चुपचाप और अपने लिए पढ़ने की आदत विकसित करने में मदद मिलती है। यह उन्हें आनंद के लिए पढ़ने, उस पर विचार करने, किसी पुस्तक या पाठ का अनुभव करने के महत्व को समझने में भी मदद करता है । बच्चों को उस पुस्तक या पाठ का स्वतंत्र रूप से चयन करने में सक्षम होना चाहिए जिसे वे इस समय के दौरान पढ़ना चाहते हैं।



चित्र ***9***. स्वतंत्र पठन. चित्र हर्षिता वी. दास के सौजन्य से

स्वतंत्र लेखन- बच्चों को अपनी कहानी या संदेश लिखने का अवसर भी दिया जाना चाहिए। इससे साझा लेखन और निर्देशित लेखन गतिविधियों के दौरान उन्होंने जो सीखा है, उसका अभ्यास करने के अवसर मिलते हैं।



चित्र 10 स्वतंत्र लेखन

शिक्षक की भूमिका और छात्रों की भूमिकाओं में संतुलन. शिक्षण के लिए यहां बताए गए विभिन्न तरीक़ों को देखें। आप देखेंगे कि इनमें शिक्षक-केंद्रित हैं और छात्र-केंद्रित तरीक़ों के बीच एक अच्छा संतुलन है। चित्र 11 यह दर्शाता है कि शिक्षक केंद्रित दृष्टिकोण से कैसे आगे बढ़कर उस ओर जाया जा सकता है जिसमें छात्रों को स्वयं से सीखने की अधिक से अधिक ज़िम्मेदारी लेने का मौक़ा मिले । इस तरह के प्रक्षेपवक्र (Trajectory)को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। प्रत्येक छात्र के सीखने के स्तर और क्षमता को ध्यान में रखना भी उतना ही आवश्यक है जो उस तरह की मदद को निर्धारित कर सकता है जिसकी उन्हें आवश्यकता है।

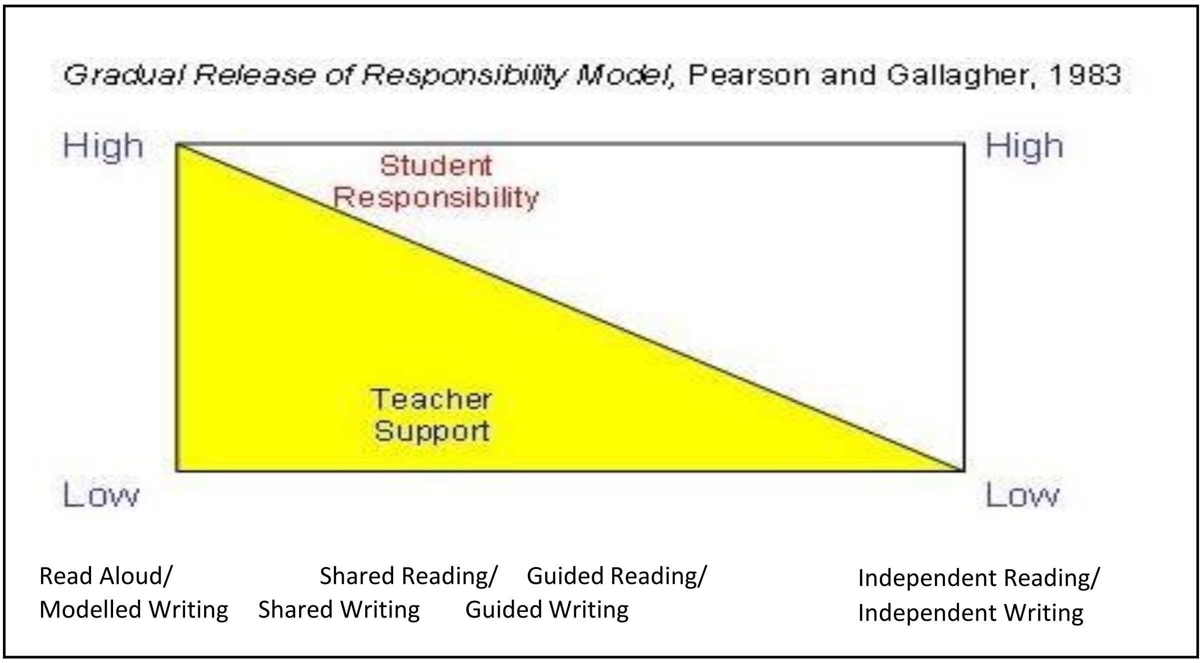


Figure 11. Approaches to teaching reading and writing.

_किन चीज़ों से पढ़ाना चाहिए?

अब हम तीसरे प्रश्न के उत्तर पर आते हैं। यह स्पष्ट है कि पाठ्यपुस्तक, हमें पहले के दो खंडों में वर्णित सभी तरीक़ों से पढ़ाने के अवसर देने के लिए पर्याप्त नहीं है। तो, एक व्यापक साक्षरता कक्षा (comprehensive literacy classroom) में शिक्षक को किस प्रकार की सामग्री का उपयोग करना चाहिए? एक संक्षिप्त सूची में निम्नलिखित चीज़ें शामिल हो सकती हैं:

- पाठ्यपुस्तकें-पाठ्यपुस्तकों का उपयोग कक्षा में किया जा सकता है, विशेष रूप से निर्देशित पठन के अभ्यास के लिए। यदि पाठ्यपुस्तक बच्चे के पढ़ने के स्तर का नहीं है तो पाठ्यपुस्तक के स्तर से बहुत

नीचे या ऊपर के पठन स्तरवाले बच्चों के लिए वैकल्पिक सामग्री की आवश्यकता होगी। अन्यथा, कई बच्चे निर्देशित पठन के अभ्यास के लिए पाठ्यपुस्तक के पाठ का उपयोग कर सकते हैं।

- बाल-साहित्य- अच्छे साहित्य तक बच्चों की पहुँच के बिना हम एक व्यापक साक्षरता कक्षा को नहीं पा सकते। मुखर वाचन और साझा पठन दोनों ही बच्चों की किताबों की अच्छी आपूर्त्ति पर निर्भर करते हैं। यदि आपके स्कूल में पुस्तकालय नहीं है तो कृपया पता करेंलगाएं कि वहाँ पुस्तकालय कैसे शुरू किया जा सकता है ।[7]
- पुस्तकालय में स्वतंत्र पठन के समय के लिए छात्रों को किताबें भी मिलनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, आप अपनी कक्षा में एक रीडिंग कॉर्नर स्थापित कर सकते हैं।[8]
- वर्कशीट: वर्कशीट का भी आपकी कक्षा में स्थान है! वे कक्षा में शामिल कौशलों के अभ्यास में मदद करते हैं ।
- वर्ण , ध्वनियां, और वर्ण -ध्वनि संबंधों को सिखाने के लिए खेल और गतिविधियाँ । इस उद्देश्य के लिए वर्ण / अक्षर कार्ड से लेकर रेत और माला के मनका (मोती) तक, कई प्रकार की सामग्रियों की आवश्यकता होती है ताकि धाराप्रवाह पाठक और लेखक बनने के लिए बच्चे उनका उपयोग अक्षरों को ट्रेस करने , खेल, पहेलियाँ और अन्य गतिविधियों में कर सकें।[9]
- प्रिंट-समृद्ध वातावरण-आपकी कक्षा की दीवारों और वातावरण को विभिन्न प्रकार के सार्थक प्रिंट से भरा होना चाहिए जो छोटे बच्चों को सीखने में मदद करे। [10] इसमें बच्चों के स्वयं के लेखन और चित्र को भी शामिल करना चाहिए।
- मिश्रित सामग्री- इनमें स्टोरी-टेलिंग के लिए कठपुतलियां, नाटक के उपकरण, पेपर, पेंसिल, क्रेयॉन, स्लेट्स आदि सामग्रियां शामिल हो सकती हैं।

यह एक व्यापक या पूर्ण सूची नहीं है। कृपया इस सूची में अपनी पसंदीदा सामग्री जोड़ने के लिए स्वतंत्र महसूस करें!

---

[7] कृपया ELI सारपत्र 3 *स्कूल पुस्तकालय के माध्यम से भाषा और साक्षरता विकास देखें*

[8] कक्षा पुस्तकालय/रीडिंग कॉर्नर के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया ELI सारपत्र 8 "कक्षा में प्रिंट समृद्ध वातावरण निर्माण" देखें

[9] वर्ण ध्वनि सम्बन्ध सिखाने में उपयोगी विविध प्रकार के डिकोडिंग गतिविधियों के लिए कृपया ELI सारपत्र 6 "लिपि सीखना" देखें

[10] प्रिंट समृद्ध वातावरण निर्माण पर जानकारी के लिए कृपया ELI सारपत्र 8 देखें

कक्षा के संदर्भ में व्यापक साक्षरता: क्या यह संभव है?

भारत में प्रारंभिक भाषा और साक्षरता (प्रारंभिक बचपन शिक्षा और विकास केंद्र, 2016) पर आधार पत्र की सिफ़ारिश है कि कक्षा में एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया जाए। लेकिन, सीमित समय और स्थान के साथ एक शिक्षक व्यापक साक्षरता कक्षा (Comprehensive Literacy Classroom) कैसे बना सकता है? क्या यह भारतीय संदर्भों में संभव है जहां अच्छी तरह से पढ़ाने के लिए बहुत सारी बाधाएं हैं? भारत में कई गैर-सरकारी संगठनों के साथ काम करने वाले कई प्रैक्टिशनर ने व्यापक साक्षरता ढांचे के साथ प्रयोग करके इस सवाल का जवाब देने की कोशिश की है। ऐसी ही एक प्रैक्टिशनर कीर्ति जयराम (ऑर्गनाइजेशन फॉर अर्ली लिटरेसी प्रमोशन- OELP) ने समकालीन शिक्षा वार्ता [11]में दो-भागों की श्रृंखला में अपने अनुभवों के बारे में लिखा और प्रकाशित किया है। नई दिल्ली के सरकारी स्कूलों में , और बाद में अजमेर[12] के एकअत्यधिक वंचित इलाक़े में संचालित उनका काम यह साबित करता है कि प्रेरित शिक्षकों के साथ संसाधन-दुर्लभ सेटिंग्स में भी यह रूपरेखा अनुकूलनीय और उपयोगी है। अपने काम में जयराम (2012) ज़ोर देकर कहते हैं कि कई भारतीय संदर्भों में काम करते समय, पढ़ने और लिखने के साथ सार्थक जुड़ाव हेतु नींव को मज़बूत बनाने के लिए समय बिताना महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में, पहली पीढ़ी के स्कूली बच्चों के साथ, उनके दिमाग में साक्षरता की प्रासंगिकता स्थापित करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि कौशल-निर्माण।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर चीज़ के लिए पर्याप्त समय हो, अपनी कक्षा में समय और स्थान दोनों को व्यवस्थित करना महत्वपूर्ण है। अगले भाग में, हम ऐसा करने के कुछ तरीक़े सुझाते हैं।

Organising Time: The “block” Approach / आयोजन समय: "ब्लॉक" पद्धति

भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2014) द्वारा प्रकाशित “ पढ़े भारत बढ़े भारत” दस्तावेज में सिफ़ारिश की गई है कि प्रति दिन स्कूल के छः घंटों में से कम से कम ढाई घंटे प्राथमिक कक्षाओं में प्रारंभिक भाषा और साक्षरता गतिविधियों पर बिताया जाए। भाषा, अन्य सभी विषयों और कौशलों को सीखने के लिए एक आधार है - और प्रारंभिक वर्षों में इसकी प्राथमिकता सबसे महत्वपूर्ण है। यदि इतना समय न भी लगाया जा सके तो भाषा और साक्षरता सिखाने के लिए प्रति दिन एक से डेढ़ घंटे (90 मिनट) का समय निकालने की कोशिश करें। अपने साप्ताहिक कार्यक्रम को "ब्लॉक" में व्यवस्थित करें। आपके साप्ताहिक शेड्यूल में कम से कम चार ब्लॉक शामिल किए जाने चाहिए – मुखर वाचन / साझा पठन , शब्द भंडार पर कार्य , गाइडेड रीडिंग और गाइडेड राइटिंग। इसके अतिरिक्त, लाइब्रेरी टाइम और होमवर्क असाइनमेंट के माध्यम से स्वतंत्र पठन / लेखन के

---

[11] कीर्ति जयराम (2008a) Early Literacy Project – Explorations and Reflections Part 1: Theoretical Perspectives. *Contemporary Education Dialogue, 5 (2),133-175.*
Jayaram, K. (2008b). Early Literacy Project – Explorations and Reflections Part 2: Interventions in Hindi Classrooms. *Contemporary Education Dialogue, 5 (2), 175-212.*

[12] अजमेर में उनके कार्य के बारे में देखें - https://www.oelp.org/

समय पर काम किया जा सकता है। मान लें कि प्रत्येक ब्लॉक 30 मिनट का है और आपके पास एक दिन में तीन ऐसे ब्लॉक हैं; तो आपके पास एक सप्ताह में 15 ब्लॉक होंगे +1 ब्लॉक लाइब्रेरी के लिए होगा।

Table 1: में गतिविधियों का समय-सारणी दिखाया गया है- आप इसमें फेर-बदल कर स्वयं के संदर्भ के लिए उपयुक्त बना सकते हैं।

<table>
<tr><th></th><th>सोमवार</th><th>मंगलवार</th><th>बुधवार</th><th>गुरुवार</th><th>शुक्रवार</th></tr>
<tr><td>ब्लॉक 1
(30 mins)</td><td>मुखर वाचन /साझा पठन</td><td>मुखर वाचन /साझा पठन</td><td>आदर्श पठन /साझा पठन</td><td>मुखर वाचन /साझा पठन</td><td>मुखर वाचन /साझा पठन</td></tr>
<tr><td colspan="6">इस ब्लॉक के दौरान बच्चे क्या सीखते हैं ?
• समझ
• मौखिक भाषा विकास
• शब्द-भंडार
• साहित्य की समीक्षा/ सराहना (विभिन्न विधाओं की समझ भी शामिल करते हुए)
• प्रिंट की अवधारणा – प्रिंट कैसे काम करता है ?
• समीक्षात्मक/विवेचनात्मक पठन</td></tr>
<tr><td>ब्लॉक 2
(30 mins)</td><td>शब्द पर कार्य</td><td>शब्द पर कार्य</td><td>शब्द पर कार्य</td><td>शब्द पर कार्य</td><td>शब्द पर कार्य</td></tr>
<tr><td colspan="6">इस ब्लॉक के दौरान बच्चे क्या सीखते हैं ?
• ध्वनि जागरूकता
• वर्ण ज्ञान
• शब्द-भंडार</td></tr>
<tr><td>ब्लॉक 3
(30 mins)</td><td>निर्देशित पठन (Guided Reading)</td><td>निर्देशित पठन (Guided Reading)</td><td>निर्देशित पठन (Guided Reading)</td><td>निर्देशित लेखन (Guided Writing)</td><td>निर्देशित लेखन (Guided Writing)</td></tr>
</table>

	इस ब्लॉक के दौरान बच्चे क्या सीखते हैं ? • धारा-प्रवाह • समझ • शब्द-भंडार	इस ब्लॉक के दौरान बच्चे क्या सीखते हैं ? • अच्छा लेखक बनने की रणनीति • लेखन के विभिन्न विधाओं की समझ • शब्द-ज्ञान और समझ

यदि आपके पास भाषा के लिए प्रति दिन डेढ़ घंटे से अधिक का समय है तो हम अनुशंसा करेंगे कि आप हर दिन एक मुखर वाचन का संचालन करें और यह भी कि आप गाइडेड रीडिंग (निर्देशित पठन) और गाइडेड राइटिंग (निर्देशित लेखन) के लिए आबंटित समय बढाएं । इसके पीछे धारणा यह है कि बच्चे पुस्तकालय से किताबें उधार ले सकते हैं और घर पर या स्कूल में ख़ाली समय में स्वतंत्र रूप से पढ़ सकते हैं।

जगह/स्थान का आयोजन

स्थान व्यवस्थित करने के लिए, इन सरल अनुशंसाओं को आज़माएं:

1. बच्चों के लिखित कार्य, कला-कृति के नमूने, शब्द, जो आप उन्हें सिखाना चाहते हैं (शब्द-दीवार या शब्द-वृक्ष), नियम जिन्हें आप याद कराना चाहते हैं, और इसी तरह की अन्य चीज़ें लगाने के लिए अपनी कक्षा की दीवारों का उपयोग करें। अपनी कक्षा में सब चीज़ों की लेबलिंग करें।

2. उन सामग्रियों को छोटे-छोटे बक्सों में व्यवस्थित रखें जिनका उपयोग न होने पर उन्हें एक तरफ़ रखा जा सके और ज़रूरत पड़ने पर सुविधापूर्वक लाया जा सके। "लेखन बॉक्स" में वे सभी सामग्रियां होनी चाहिए जो बच्चों को अपने लेखन-कार्य के लिए आवश्यक हो सकती हैं - जिनमें पेंसिल, क्रेयॉन, इरेज़र, पेपर, गोंद, यहां तक कि स्टैम्प (मुहर)भी शामिल हैं, जिनका उपयोग बच्चे अपने काम पर "स्टैम्प" (मुहर) लगाने में कर सकते हैं। "वर्ड वर्क" बॉक्स में वर्ण के कट-आउट, गेम और गतिविधियाँ हो सकती हैं, जो उस आयु समूह के लिए उपयुक्त हैं, जैसे- वर्ण ट्रेस करने के लिए रेत का ट्रे, माला के मनके (मोती), आदि । "रीडिंग बॉक्स" में बच्चों की विभिन्न प्रकार की किताबें होनी चाहिए।

3. अपनी कक्षा में रस्सी/तार लगाएं और उसमें लाइन से बच्चों की किताबें लटकाएँ। ये वे पुस्तकें हैं जिन्हें आप मुखर वाचन के लिए इस्तेमाल करेंगे ; जबकि पढ़ने के बॉक्स में रखी किताबों को बच्चे ख़ाली समय में स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए ले सकते है। कृपया हर हफ्ते या दो हफ्ते में अपनी "डिस्प्ले लाइन/ रस्सी पर टंगी" किताबों को बदलते रहें ।

4. यदि आपकी कक्षा काफी बड़ी है तो अपनी कक्षा में अच्छी रोशनी वाली जगह में एक "रीडिंग" और एक "लेखन" कॉर्नर बनाने पर विचार करें जहां इन सामग्रियों को इस तरह लगाया जाए कि बच्चे देखकर लिखने और पढ़ने के लिए आकर्षित हो जाएं।

5. प्रत्येक बच्चे के लिए फ़ोल्डर बनाकर रखें जिसमें आप उनके काम (लेखन, उदाहरण के लिए) के साथ-साथ प्रत्येक बच्चे के लिएअपने नोट्स और मुल्यांकन को रख सकते हैं।

निष्कर्ष

हमने आपको (या वासंती को) को कोई सरल उत्तर नहीं दिया है कि आप अपनी कक्षा के सभी बच्चों, जो एक - दूसरे से बिल्कुल अलग, अनूठे और क़ीमती हैं, को किसी एक विधि से कैसे पढ़ा सकते है। हो सकता है, हमने वासंती के कई प्रश्नों को पूरी तरह अनुत्तरित छोड़ दिया हो। लेकिन हमें उम्मीद है कि हमने उसके व्यापक प्रश्न को संबोधित किया है कि उसे अपने सभी छात्रों तक पहुँचने के लिए किस पद्धति का उपयोग करना चाहिए। यहाँ, हमने दो काम करने की कोशिश की है।

एक, हमने आपको विचारों का एक बहुत व्यापक ढांचा प्रदान किया है जिसे आपको अपनाने की, बेहतर ढंग से समझने की, अपने संदर्भो और आवश्यकतानुसार ढालकर आज़माने की ज़रुरत होगी । व्यापक साक्षरता फ़्रेमवर्क(Comprehensive Literacy Framework) एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है जो पढ़ने और लिखने के कौशल को विकसित करने की बुनियादी बातों को समान रूप से महत्व देता है - डिकोडिंग के लिए रणनीति और स्वचालित रूप से अक्षरों और ध्वनियों को पहचानने के साथ-साथ समझ, अर्थ-निर्माण, आदि। यह बच्चों को साहित्य में कई प्रकार की विधाओं और विभिन्न प्रकार की प्रिंट सामग्रियों जिनके साथ वे पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में जुड़ सकें, की उपलब्धता और उनसे निरंतर संपर्क कराने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है। यह पढ़ने, लिखने, सुनने और बोलने के सभी पहलुओं का समर्थन करने के लिए पर्याप्त संभावना प्रदान करता है। यह “ज़िम्मेदारी का क्रमिक हस्तांतरण’ ("gradual release of responsibility ") मॉडल (ड्यूक एंड पीयरसन, 2002) का भी सहारा लेता है जिसमें शिक्षक पहले करके दिखाते हैं , फिर, छात्रों के साथ काम करते हैं (साझा और निर्देशित पठन और लेखन प्रारूपों के माध्यम से), और उसके बाद ही छात्रों से स्वतंत्र रूप से काम करने की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार, यह शिक्षक मॉडलिंग (करके दिखाना) के साथ- साथ बच्चों को अभ्यास करने और अपने ज्ञान और सीख का प्रयोग करने के लिए पर्याप्त संभावनाएं प्रदान करता है ।

दो, इस प्रैक्टिशनर सारपत्र के माध्यम से हम आशा करते हैं कि हमने इस विचार पर ज़ोर दिया है कि बच्चों को पढ़ना और लिखना सिखाना किसी एक विधि या तकनीक को जानने या अपनाने का विषय नहीं है। इसके लिए विभिन्न तकनीकों और दृष्टिकोणों की गहन समझ की आवश्यकता होती है और व्यापक साक्षरता कक्षा बनाने के लिए इनको संतुलित करने के तरीक़े को जानना भी आवश्यक है । लिपि में महारत हासिल करने, साफ़-साफ़ लिखना सीखने , या शब्दों का सही उच्चारण करने का यह मतलब नहीं है कि बच्चा एक अच्छा पाठक या लेखक बन गया है। कुशल और पठन-लेखन में जुटे हुए पाठक और लेखक बनने के लिए बच्चे को विभिन्न तरीक़ों से अच्छी गुणवत्ता वाले साहित्यों से जोड़ा ही जाना चाहिए एवं आदर्श (modelled)और निर्देशित पठन-लेखन के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए । हमने आपको यह विश्वास दिलाने की कोशिश की है कि इस तरह की व्यवस्था बनाना संभव है। वास्तव में, केवल संभव ही नहीं बल्कि , यह आवश्यक है कि आप बच्चों के सही मायने में साक्षर बनने के लिए इन अवसरों का निर्माण करें।

अंत में, ध्यान में रखने के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि यह ढांचा या कुछ और जो आप पढ़ सकते हैं, को सिर्फ एक विधि तक ही सीमित नहीं करना चाहिए । संतुलन का मतलब ये नहीं है "एक तरीक़ा सभी बच्चो के लिए उपयोगी होगा" (फिजराल्ड़, 1999)। चिंतनशील शिक्षकों को अपनी कक्षाओं और शिक्षार्थियों की ज़रूरतों के अनुसार अपने दृष्टिकोण को लगातार अनुकूलित करने की आवश्यकता है!

Adapted from ELI Handout 12 (2019):" Comprehensive Literacy Instruction Model in Indian Classrooms"

Other related material- भारत में प्रारंभिक भाषा तथा साक्षरता - दृष्टि पत्र (unit 6)

References

Centre for Early Childhood Education and Development (2016). *Early language and literacy in India: A position paper.* Delhi: Ambedkar University.

Duke, N. K., & Pearson, P. D. (2002). Effective practices for developing reading comprehension. In A. E. Farstup & S. J. Samuels (Eds.), *What research has to say about reading instruction* (pp. 205–242). Newark, DE: International Reading Association.

Ellery, V. (2009). *Creating strategic readers: Techniques for developing competency in phonemic awareness, phonics, fluency, vocabulary, and comprehension*. Newark, DE: International Reading Association.

Fitzgerald, J (1999). What is this thing called "balance"? *The Reading Teacher, 53*, 100-107.

Goodman, K. S. (1967). Reading: A psycholinguistic guessing game. *Journal of the Reading Specialist, 6*(4), 126-135.

Jayaram, K. (2012). Toward a conceptual framework for early literacy: A balanced and socially sensitive approach. *Language and Language Teaching, 1 (1),* 32-39.

Morrow, L. M., & In Gambrell, L. B. (2018). *Best practices in literacy instruction*. New York: The Guilford Press.

Ministry of Human Resource Development (2014). *Padhe Bharat Bhade Bharat: Early reading and writing with comprehension & early mathematics programme*. http://ssa.nic.in/pabminutesdocuments/padhe%20Bharat%200Badhe%20Bharat.pdf

National Research Council (1998). *Preventing Reading Difficulties in Young Children*. Washington, DC: The National Academies Press. https://doi.org/10.17226/6023

Nettles, D. H. (2006). *Comprehensive literacy instruction in today's classrooms: The whole, the parts, and the heart*. Boston: Pearson/Allyn and Bacon.

Authors: Shailaja Menon, Harshita V. Das **| Conceptual Support and Editing:** Shailaja Menon

Copy-editing: Simrita Takhtar **| Layout and Design:** Harshita V. Das